Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

शिक्षण में शब्द–चित्र और शब्द–संस्कार का महत्व

डॉ0 अनिल कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
चौ0 शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माछरा, मेरठ, उत्तर प्रदेश।

सारांशः– ध्वनि का सार्थक और उच्चरित स्वरूप शब्द है, जो आक्षरिक रूपी छोटे–छोटे चित्रों का समवाय है। भाषा मे शब्द का यही स्वरूप चाहे अपनी ध्वन्यात्मकता में कर्ण गोचर हो अथवा लिपि के रूप में नेत्रग्राह्य हो, शब्द चित्र ही है। शब्द चित्र का प्रभाव जिसे हम शिक्षण कला के क्षेत्र में शब्द – संस्कार अथवा सीखने की सहज सम्प्राप्ति कहेंगें, का नाता शिशु/बालक/छात्र की मनोवैज्ञानिक उत्सुकता से जोड़ा जाना चाहिए। आज शिशु–शिक्षा की विभिन्न शिक्षण–पद्धतियों तथा अनेक भाषा शिक्षण विधियों के प्रचलित होने पर शब्द – चित्र से शब्द – संस्कार की भारतीय पद्धति का विचार किया ही नहीं गया। शब्द संस्कार केवल भाषा – शिक्षण –पद्धति का ही विषय मात्र नहीं है, वरन प्रत्येक विषय – शिक्षण की विधि को प्रभावी बनाता हैं। नाटकों के संवादों में शब्द – चित्र ही शब्द संस्कार के रूप में दर्शकों को साधारणीकरण तक पहुँचाते हैं। शब्द – चित्र का अर्थ हैं कि शब्द ही विभिन्न सन्दर्भो, सवॉदों और वाक्य के घटक के रूप में नानाविध अर्थ बोधक और भावप्रद स्वरूपों को प्रस्तुत करता है। शिक्षा मनो विज्ञान जिसे कक्षा–कक्ष वातावरण (ब्सेंमदअपतवदउमदज) कहा जाता है, वही तो शब्द चित्र की अर्थवत्ता और भावसत्ता की भूमि हैं। शब्द का सम्यक अर्थ और समुचितभाव किसी सन्दर्भ अथवा प्रसंग में ही स्पष्ट होता है। रहीम की वह उक्ति कितनी सटीक है कि. ''सैधव मॉंग्यों जैंवते का धोरे को काम'' अर्थात् किसी ने भोजन करते समय यदि 'सैधव' (घोडा/नमक) माँगा तो नमक ही लाना होगा, उस समय घोड़े की आवश्यकता नही है। शब्द चित्र खींचकर यदि अर्थ पूछा जाये तो ही शब्दार्थ ठीक होगा। शब्द प्रयोग करते समय कई बार शब्दो में निहित संस्कारो की उपेक्षा हो जाती है क्योंकि हमारा ध्यान सामान्यतः प्रचलित अथवा रूढिगत अर्थ तक ही सीमित हो जाता है। 1857 की आजादी की लड़ाई को सिपाही विद्रोह तथा पथम स्वतन्त्रता समर या स्वतन्त्रता संग्राम कहने में स्वभावतः 'शब्द संस्कार' समान हो ही नही सकते। नानाविध शब्द प्रयोगों मे शब्द के जिस नाद–सौन्दर्य, उसकी अर्थगत सत्ता और भावानुभूति को आत्मसात करते हैं, वह उस शब्द का संस्कार ही है। हम जानते हैं कि प्रत्येक शब्द का एक भाव जगत, भावाकाश, भाव – धरातल और भावधारा होती हैं जो उसकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक भूमि पर प्रस्फुटित होकर अंकुरित आर पल्लावित होकर सामान्य/विशेष अर्थगत सत्ता का अधिग्रहण करती हैं। शब्द का परम्परागत ओर रूढ़िगत प्रयोग उसको स्थायी अर्थवत्ता प्रदान करता है। संस्कार – क्षेत्र में शब्द संस्कार के अनेक आयाम एवं परिवेश हैं। शब्द – संस्कार के रूप में जो भावानुभूति होती है अथवा जो भावावेश जन्मता है या जिस अर्थ का संज्ञान लेते हैं, वे स्वयं सांस्कृतिक उन्मेष ही है। इसीलिए शब्द – संस्कारा से उद्भूत सांस्कृतिक अनुभूति या बोध भिन्न–भिन्न देश काल में समान नहाकर भिन्नता ही लिए हुए होगा। अक्षर लिपिरूप मोटा चित्र ही है जो समवेत होकर संस्कार करने वाले शब्द–चित्र का रूप धारण करता है। इसीलिए शब्द चित्र में संस्कारित करने की क्षमता है। वार्ता संवाद अथवा कक्षा–कक्ष में शिक्षक द्वारा संस्कारप्रद शब्द चित्रों का निर्माण उसके ज्ञान सागर के मोती और मणियाँ बनकर महिला–मण्डित कर शब्द सम्पदा का स्वामी सिद्ध कर देगी। शब्द – संस्कार की एक सांस्कृतिक भूमि भी होती है। शब्दो का संस्कार एक सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करता है। हमने धर्म शब्द को रिलीजन (त्मसपहपवद) और संस्कृति शब्द को कल्चर (ब्नजजनतम) अंग्रेजी भाषा में कहा है किन्तु क्या श्धर्मश शब्द से जो भाव जगत, अर्थ, बोध हमारे अन्तर्मन में जन्म लेता है, जो विचार जिस श्रद्धा और भक्ति के साथ हृदय में

उद्भूत होता है जो चेतना जगती है क्या ये सब स्थितियाँ मनोदशाएँ और भाव शबलताएँ अनुवादित शब्दो से हृदयों और मस्तिष्कों में जन्म ले सकेंगी तो कदापि नही। प्रत्येक शब्द अपने देश की सांस्कृतिक गंध लेकर अपने भावजगत की निर्मिति करता है।

मुख्य शब्द– शिक्षण, शब्द, चित्र, शब्द, संस्कार, ध्वनि, कर्ण।

ध्वनि का सार्थक और उच्चरित स्वरूप शब्द है, जो आक्षरिक रूपी छोटे–छोटे चित्रों का समवाय है। अक्षर/शब्द रूप में, ध्वनि ही कर्ण गोचर है। भाषा मे शब्द का यही स्वरूप चाहे अपनी ध्वन्यात्मकता में कर्ण गोचर हो अथवा लिपि के रूप में नेत्रग्राह्य हो, शब्द चित्र ही है। शब्द अपनी भावसत्ता में सामान्य/विशेष अर्थबोधक तथा कल्पना प्रसूत होते हुए भी अपने देश और समाज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पृष्ठभूमि से प्राप्त परम्परागत, रूढिगत, रीति और नीतिगत मान्यताओं में ही परिलक्षित होता हैं। अतः शब्द चित्र का प्रभाव जिसे हम शिक्षण कला के क्षेत्र में शब्द – संस्कार अथवा सीखने की सहज सम्प्राप्ति कहेंगें, का नाता शिशु/बालक/छात्र की मनोवैज्ञानिक उत्सुकता से जोड़ा जाना चाहिए।

आज शिशु–शिक्षा की विभिन्न शिक्षण–पद्धतियों तथा अनेक भाषा शिक्षण विधियों के प्रचलित होने पर शब्द – चित्र से शब्द – संस्कार की भारतीय पद्धति का विचार किया ही नहीं गया। शब्द संस्कार केवल भाषा – शिक्षण –पद्धति का ही विषय मात्र नहीं है, वरन प्रत्येक विषय – शिक्षण की विधि को प्रभावी बनाता हैं। शब्द का रूप, नाद – सौन्दर्य और मुख–ध्वनि–जनित होने पर भी रचना रूप में चित्रात्मक ही है, और ये तीनो तत्व ही चित्र तथा मन को संस्कारित करते हैं। तभी तो ध्वनि रूप में शब्द तथा चित्र रूप में दृष्टिगोचर होने वाली वस्तुएँ एवं प्राणी श्चल–चित्रश के रूप में आकर्षित और प्रभावित करते हैं। नाटकों के संवादों में शब्द – चित्र ही शब्द संस्कार के रूप में दर्शकों को साधारणीकरण तक पहुँचाते हैं।

शब्द – चित्र का स्वरूप

शब्द – चित्र का अर्थ हैं कि शब्द ही विभिन्न सन्दर्भों, सवॉदों और वाक्य के घटक के रूप में नानाविध अर्थ बोधक और भावप्रद स्वरूपों को प्रस्तुत करता है। ये शब्द चित्र ही अनुभूतियों को जन्म देते तथा कल्पना – प्रस्तुत भाव दर्शाओं का अवतरण करते है। यही कारण है कि इन शब्द चित्रों को 'शब्दानां अनेकार्थाः' ही नही तोवाक् और अर्थ का सम्पृक्त रूप भी माना गया। शिक्षा मनो विज्ञान जिसे कक्षा–कक्ष वातावरण (ब्सेंमदअपतवदउमदज) कहा जाता है, वही तो शब्द चित्र की अर्थवत्ता और भावसत्ता की भूमि हैं रोचक तथा प्रेरक कथा– कहॉनियों और नाट्य–संवादों के माध्यम से हृदयों में जो रसानुभूति और भावदशाएँ जन्म लेती है, वे शब्द चित्रों से उदभूत शब्द संस्कार ही है। यहाँ शब्द–चित्र के स्वरूप को स्पष्ट करने की दृष्टि से एक पदनाम संज्ञा, दूसरा भाववाची संज्ञा शब्द तथा तीसरा क्रियावाची शब्द लिया गया है–

1– मुखिया

(क) कृष्ण बचपन से ही अपने बुद्धि कौशल, मैत्री बन्धन, शक्ति और प्रेमभावना के कारण ग्वाल–बालों के मुखिया थे।

2– हमारे शरीर के सभी अंगों हाथ, पैर, पेट और कमर आदि में मुख ही सबसे बढ़कर है, वैसे ही परिवार में भी सबकी चिन्ता करने वाला प्रमुख व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है।

3– मुखिया शब्द भी मुख्य से ही बना है।

4– शिवाजी भी अपने समय के अच्छे नेता और मराठों के सरदार थे। इसी कारण वे अपने समाज के मुखिया थे।

(ख) संकट –

1– नदी की भयंकर बाढ़ द्वारा होने वाले विनाश ने गाँव वालो के सामने रोटी, कपड़े, मकान और अनाज का संकट खड़ कर दिया।

2– उफनति पानी की इन तूफानी लहरों के संकट से अपने परिवार और पशुओं को कैसे बचायें ?

3– पिता की आज्ञा–पालन हेतु राम ने वन के संकटो को हँसते–हँसते सहन किया।

4– वीर शिरामणी तेन सिंह ने हिमालय की चोटी पर विजय का झण्डा गाडने के लिए अनेक संकटो का हँसते हँसते सामना किया।

ग– भ्रमण–

1– पुराने समय में साधु–सन्त, नगर–नगर भ्रमण करते देश की यात्रा तो करते ही थे, देवमन्दिरों के दर्शन भी करते थे।

2– अपने वनवास काल में राम ने दक्षिण भारत का भ्रमण किया था।

3– कृष्ण ने उत्तरी भारत के दुष्ट राजाओं का पता अपने भ्रमण काल में ही कर लिया था।

4– स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द और शंकराचार्य जी ने भ्रमण करके ही धर्म प्रचार का कार्य किया था।

स्पष्ट है कि शब्द का सम्यक अर्थ और समुचितभाव किसी सन्दर्भ अथवा प्रसंग में ही स्पष्ट होता है। रहीम की वह उक्ति कितनी सटीक है कि. ''सैधव माँग्यों जैंवते का धोरे को काम'' अर्थात् किसी ने भोजन करते समय यदि 'सैधव' (घोडा/नमक) माँगा तो नमक ही लाना होगा, उस समय घोड़े की आवश्यकता नही है। सही प्रतीति तो शब्द का उच्चारण या दर्शन भी नहीं कराता वरन् सन्दर्भ अथवा प्रसंग वश उभरा हुआ शब्द – चित्र की सम्यक अर्थ की प्रतीति कराता है। शब्द चित्र खींच कर यदि अर्थ पूछा जाये तो ही शब्दार्थ ठीक होगा। हाथ शब्द का अर्थ होता है– हथेली, चार उँगलियों और अगूठो हाँ अर्थ को अधिक विस्तृत किया तो हथेली सहित कंधो तक जुड़ी लम्बी भुजा भीहो सकती है। किन्तु प्रश्न फिर यही है कि अर्थ किस सन्दर्भ/प्रसंग में क्या लिया जाए? 'हाथ' शब्द से सम्बद्ध कुछ मुहावरो को यदि देखें तो हाथ से ऊपर किया गया अर्थ निकलता ही नही, यथा हाथ दिखाना, हाथ की सफाई, हाथों हाथ लेना, हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना, हाथ बटेर लगना, हाथ मलना, हाथ पसारना, हाथका खिलौना बनना, हाथ–पाँव मारना, हाथ का सच्चा होना, वैद्य को हाथ दिखाना, हत्थे चढ़ जाना, हाथ न आना आदि न जाने कितने मुहावरे गिनाये जा सकते हैं। न केवल हाथ वरन् शरीर के अनेक अंगो यथा आँख, नाक, कान, दॉत आदि पर मुहावरो का जमघट खड़ा किया जा सकता है।

इसी प्रकार 'अन्तः/अन्तर' शब्द को समझने के लिए अन्तःकरण, अन्तर्दाह, अन्तर्मन, अन्तर्गृह अन्तर्देशीय अन्तर्राष्ट्रीय अन्तर्मुखी तथा देशान्तर मतान्तर प्रकारान्तर, समानान्तर आदि शब्दो में आया अन्तर शब्द अपने विभिन्न अर्थ और रूपों में प्रसंग/सन्दर्भगत शब्द चित्रों के माध्यम से ही प्रभावी रूप में समझाया जा सकता है। अन्तः/अन्तर का अर्थ यदि केवल भीतर बताया गया तो शब्द की व्यापकता, नानाविध व्याप्त अर्थसत्ता तथा भाव बोध ही तिरोहित हो जायेगा।

शब्द–संस्कार

शब्द प्रयोग करते समय कई बार शब्दो में निहित संस्कारो की उपेक्षा हो जाती है क्योंकि हमारा ध्यान सामान्यतः प्रचलित अथवा रूढिगत अर्थ तक ही सीमित हो जाता है। नेत्र नयन लोचनदृक्–अक्ष–आँख, क्रोध कोप–आक्रोश तथा प्रेम–स्नेह–ममता प्यार आदि शब्द पर्यायवाची होते हुए भी अपने संस्कार–बोध में अन्तर लिए है। नेत्र शब्द के प्रयोग से जा अर्थ और भाव ग्रहण किया जाता है क्या राम को कमल नयन अथवा 'राजीव लोचन' कहने में कमल और नेत्र का समान अर्थ और भाव ग्रहण किया जाता है? क्रोध तथा कोप दोनो शब्दो में आक्रोश का तत्व होते हुए भी शत्रु के लिए क्रोध और पति–पत्नी माँ तथा सन्तान के सन्दर्भ में क्रोध न आकर कोप ही आयेगा। कैकयी कोपभवन में गई थी 'क्रोध–भवन' में नही। उसी प्रकार पति–पत्नी/प्रेमी–प्रेमिका के मध्य 'प्रेम' भाई–बहन के मध्य श्स्नेहश तथा माँ और सन्तान के मध्य ममता, वात्सल्य शब्द आयेगें। शब्दो के प्रयोग में उसके सम्यक अर्थ बोध तथा भावनुभूति की दृष्टि से समुचित शब्द संस्कार का विचार करना ही होगा।

1857 की आजादी की लड़ाई को सिपाही विद्रोह तथा पथम स्वतन्त्रता समर या स्वतन्त्रता संग्राम कहने में स्वभावतः 'शब्द संस्कार' समान हो ही नही सकते। हत्या और वध का अर्थ समान होने पर भी अपराधी/पापी/डाकू के लिए 'हत्या' किन्तु अभिमन्यु/गॉधी/श्रद्धानन्द के लिए वध शब्द का ही प्रयोग समीचीन होगा। उसी प्रकार विरोधी दल और विपक्षी दल का अर्थ–भाव समान नही हैं बलिदान और मृत्युदण्ड का परिणाम समान होने पर भी दोनो का संस्कार/भानानुभूति और अर्थबोध सम नही हैं। चन्द्रशेखर भगत सिंह अश्फाक उल्ला आदि क्रान्तिकारियों

को मृत्युदण्ड ही दिया गया था, किन्तु हम उसे बलिदान ही कहेंगें और हत्यारे या डाकू की फॉसी को बलिदान कदापि नही वरन् मृत्युदण्ड ही कहेगें। यही तो शब्द का संस्कार हैं अतः नानाविध शब्द प्रयोगों मे शब्द के जिस नाद–सौन्दर्य, उसकी अर्थगत सत्ता और भावानुभूति को आत्मसात करते हैं, वह उस शब्द का संस्कार ही है।

हम जानते हैं कि प्रत्येक शब्द का एक भाव जगत, भावाकाश, भाव – धरातल और भावधारा होती हैं जो उसकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक भूमि पर प्रस्फुटित होकर अंकुरित आर पल्लावित होकर सामान्य/विशेष अर्थगत सत्ता का अधिग्रहण करती हैं। शब्द का परम्परागत ओर रूढ़िगत प्रयोग उसको स्थायी अर्थवत्ता प्रदान करता है। भाषा नियमों के अनुसार शब्द के भावबोधकगुण ओर उसकी अर्थवत्ता में परिवर्तन भी होता हैं, जैसे 'चारपाई' शब्द अपने परम्परागत अर्थ और रूढिगत प्रयोग में चार पैरों वाली ही विशेष वस्तु खाट/शय्या के लिये आयेगा तथा उससे अर्थ भी खाट/शय्या ही ग्रहण किया जायेगा। चारपाई कहने पर कोई भी कुर्सी/मेज उठाकर नही लायेगा तथा चारपाई शब्द सुनकर गाय/भैंस/बकरी/बिल्ली/कुतिया का अर्थ भी ग्रहण नही करेगा और ना ही वह रामचरित मानस की चौपाई सुनायेगा पंकज, नीरज, तोयद, वारिद, नीरद आदि भी ऐसे ही शब्द है पक्षी शब्द सुनकर/पढ़कर उससे कोई भी पक्ष (पंख) धारण करने वाले मुर्गे, सारस मोर का अर्थ ग्रहण नहीं करेगा वरन् आकाश में उड़ने वाले पक्षियों (खग) का ही अर्थ ग्रहण करेगा। यद्यपि शब्द के अर्थ में परितर्वन भी होता है, जैसे 'सम्भ्रात' शब्द का अर्थ कभी भटका हुआ रहा होगा किन्तु वह कुलीन/सम्मानित/ सम्पत्ति वाले अर्थ में समझा जाता हैं। उपाध्याय शब्द से ही बनने वाले पाध्यें पाधा ओझा, झा और 'जी' शब्दों का अर्थ और भावगत संस्कार उपाध्याय से भिन्न है। गोचर भूमि और दृष्टिगोचर शब्द 'गोचारण' से बने हैं किन्तु गोचर भूमि (चरागाहा) में सर्वत्र ही भैंसे बकरियाँ, भेडे आदि भी चरते है और आज तो अनेक चारागाहो में गायें होती ही नही तो वह चरागाहा गोचर भूमि ही कहा जायेगा, कोई भी भाषाविद भैंसचर/बकरी/भेड़चर भूमि नही कहेगा। इस प्रकार परिवर्तन और अपरिवर्तन की क्रिया चलती ही रहेगी।

शब्द–संस्कार और संस्कृति

संस्कार – क्षेत्र में शब्द संस्कार के अनेक आयाम एवं परिवेश हैं। शब्द – संस्कार के रूप में जो भावानुभूति होती है अथवा जो भावावेश जन्मता है या जिस अर्थ का संज्ञान लेते हैं, वे स्वयं सांस्कृतिक उन्मेष ही है। इसीलिए शब्द – संस्कारा से उद्भूत सांस्कृतिक अनुभूति या बोध भिन्न–भिन्न देश काल में समान नहाकर भिन्नता ही लिए हुए होगा। एक अंचल/क्षेत्र/प्रदेश/देश विदेश की भाषा के शब्दों का दूसरे स्थान/देश में वही भाव/अर्थ/संवेदना ग्रहण नही की जायेगी। एक देश से दूसरे देश में तो सामाजिक संरचना, सभ्यता, संस्कृति, मान्यताएँ और जीवन शैली में अन्तर हो जाने के कारण शब्द विशेष का संस्कार, भावानुभूति और अर्थबोध भी भिन्न हो जाता है। इतना नही तो वही अर्थ ग्रहण करने पर भी सांस्कृतिक बोध एवं प्रभाव समान नही हो सकता। उदाहरण के लिए गंगाजल, सती सावित्री सीता पार्वती अनुसूया विवाह, फेरे, सन्त, ऋषि आश्रम विद्यामन्दिर, गो, रामराज्य, सगुण निर्गुण यज्ञ, पूजा, साधना, तप, शौच, निग्रह और संयम आदि सहस्रों शब्दों का संस्कार, भाव, अर्थ और अनुभूति इसी देश का वासी जिस रूप में स्वर। दूसरे देशों में रहने वाले ईसाई या मुस्लिम का तो प्रश्न ही नही उठता, क्योंकि शब्द – संस्कार की एक सांस्कृतिक भूमि भी होती है।

यदि प्रयोग हेतु कुछ शब्दों का हम अंग्रेजी, फ्रांसिसी जर्मन, चीनी अथवा रूसी भाषा में अनुवाद भी कर दें तो भी उन्ही शब्दों से हम जो संस्कार भाव और अर्थ जिस स्तर ग्रहण करेगें अंग्रेज, फ्रांसवासी जर्मनी, चीनी या रूसी कदापि ग्रहण नही कर सकते। शब्दो का संस्कार एक सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करता है। हमने धर्म शब्द को रिलीजन (त्मसपहपवद) और संस्कृति शब्द को कल्चर (ब्नजजनतम) अंग्रेजी भाषा में कहा है किन्तु क्या श्धर्मश शब्द से जो भाव जगत, अर्थ, बोध हमारे अन्तर्मन में जन्म लेता है, जो विचार जिस श्रद्धा और भक्ति के साथ हृदय में उद्भूत होता है जो चेतना जगती है क्या ये सब स्थितियाँ मनोदशाएँ और भाव शबलताएँ अनुवादित शब्दो से हृदयों और मस्तिष्कों में जन्म ले सकेंगी तो कदापि नही। 'मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' इस पद को सुनकर/पढ़कर जो भक्तिभाव उभरते हैं जिस पावन प्रेम की अनुभूति होती है क्या किसी विदेशी भाषा में इस पद का सर्वश्रेष्ट अनुवाद करके भी उस भाषा के भाषियों में वही भाव –भक्ति और पावन प्रेम की अनुभूति कराई जा

सकती है तो एक ही उत्तर होगा कि नही श्नही, कदापि नहीं। यही है शब्द की शक्ति प्रभाव भावानुभूति, अर्थ बोध, संस्कार और सांस्कृतिक मनोभूमि।

प्रत्येक शब्द अपने देश की सांस्कृतिक गंध लेकर अपने भावजगत की निर्मिति करता है और अर्थ सम्पदासे बौद्धिक समृद्धि प्रदान करता है हमारी संस्कृत भाषा के शब्द भारत की उदात्त सांस्कृतिक भूमि की उपज है। अतः उनमें जो सांस्कृतिक गंध रची–बसी है उतनी हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में नहीं है, जो स्वाभाविक है। शब्द का जितना सम्बन्ध सांस्कृतिक धरातल और संस्कार पक्ष से होता हैं उतनी ही प्रभान्विति मानस जगत को उद्रवेलित करती हैं इस उद्वेलन और भाव शबलता को 'शौचालय शब्द और उसी के लिए अंग्रेजी शब्द लैट्रीन' से समझा जा सकता है। घर में भोजन करते समय शौचालय/पाखाना शब्द सुनते ही शब्द के संस्कार– प्रभाव के कारण शरीर में झुरझुरी सी पैदा हो जाती है। वातावरण में एक बदबू सी घुल जाती है। नाक में दुर्गन्ध सी प्रवेश करने लगती है। ग्लानि/घृणा की अनुभूति होने लगती है। तथा भोजन का स्वाद ही बिगड जाता है किन्तु श्लैट्रीन शब्द एक बार नही कई बार कहने या सुनन पर ऊपर वर्णित दशा होती है क्या?, उसी प्रकार श्मशान शब्द कान में पड़ते ही मनोदशा में परिवर्तन हो जाता है। अट्टहास और मजाक एक हो जाता है। गम्भीरता पसर जाती है। कारण सांस्कृति धारा से प्रादुर्भूत शब्द और उसके संस्कार की प्रभान्विति।

अक्षर लिपिरूप मोटा चित्र ही है जो समवेत होकर संस्कार करने वाले शब्द–चित्र का रूप धारण करता है। इसीलिए शब्द चित्र में संस्कारित करने की क्षमता है। वार्ता संवाद अथवा कक्षा–कक्ष में शिक्षक द्वारा संस्कारप्रद शब्द चित्रों का निर्माण उसके ज्ञान सागर के मोती और मणियाँ बनकर महिला–मण्डित कर शब्द सम्पदा का स्वामी सिद्ध कर देगी। अतः करणीय होगा कि

1– शब्द–चित्रों का संग्रह छात्र के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से किया जाये।
2– शब्द चित्रों के सर्जक वाक्य उस देश के इतिहास, साहित्य, धर्म और लोक जीवन की परम्परा से ग्रहण किए जाये।
3– शब्दगत विविध अर्थों और भावों के प्रकट करने वाले वाक्यों की रचना की जाये।
4– व्याकरण की दृष्टि से शब्दो के रूप और सम्बन्धों का परिचय कराया जाये।
5– वाक्य के पदो में शब्द चित्रों की योजना अनेक रूप हो।
6– वाणी तथा स्वरों के आरोह–अवरोह, बलाघात के कारण शब्दों के परिवर्तित भावों एवं अर्थो को स्पष्ट किया जाये।
7– उददेश्य विषयगत है या वस्तुगत, सामान्य/विशेष है, ध्यान में रहे।
8– व्याकरण या भाव पक्ष अथवा अर्थ पक्ष प्रधान है, स्पष्ट कल्पना रहे।
9– ध्वन्यात्मकता–मात्मकता तथा नाद सौन्दर्य का विशेष ध्यान रहे।
10– भाषा शिक्षण में पाठ की विधा अवश्य स्पष्ट की जाये।
11– विषय/शीर्षक का उददेश्य शब्द चित्र और शब्द संस्कार से अभिव्यक्त हो।
12– भाषा कौशल सम्प्राप्ति एवं वृद्धि की दृष्टि से शब्द चित्रों एवं शब्द संस्कारों का विस्तृत विचार हो।

सन्दर्भ–

1. हिंदी शिक्षण – डॉ राम शकल पांडेय
2. हिंदी भाषा दिग्दर्शन – रेनू साहनी
3. वांग्मय विलास – डॉ शिव नाथ पांडेय
4. हिंदी भाषा कौशल– श्री वासुदेव शर्मा
5. हिंदी भाषा की भाव सरसता – डॉक्टर मक्खन लाल शर्मा